रात्री क्लास ओम् शान्ती 5-2-67

(क्लास में स्वदेश वहन का पत्र सुन रहे थे कि कैसे-2 लोग प्रश्न पूछते है) समझाना चाहिये प्रजापिताब्रह्मा उनके बच्चे और बच्चियां दोनो ही होंगें। मैजारटी माताओं की है। थोड़े में समझाना चाहिये। जास्ती तीक्ष्ण नही करनी है। बाप का ही परिचयदेना है। जितना कम बोलो उतना अच्छा है। ज्ञानही ऐसा है जो सेकेंड में परिचय दिया जाता है। अक्सर करके बच्चियां महेलियों टोटके आद बहुत निकालती है। बाप कहते ही है हेयर नो इविल। शास्त्रों के मिसाल देने भी नही है। जवकि शास्त्र भी झूटे है तो फिर हम मिसाल भी क्यू देवे? सबसे सच्ची-2 बात ऊच ते ऊचं बाप और इनका ऊच ते ऊच वसी। बाप को याद करने से आत्मा पावन सतोप्रधान बन जाती है। एक सेकिंड में जीवन मुक्ति। सो भी नब्ज देखकर फिर समझाया जाता है। हकीम भी झट देखने से बता देते है तो थोड़ी ही बात करने से नब्ज का झट मालूम पड़ जाता है। जैसा आदमी देखो उसी रीत समझाओ। पहले तो हमारा शिव बाबा, बापभी है टीचर भी है गुरू भी है। बाप को भूलने से मुर्दे बन जाते है।बाप ही पढ़ा रहे हैं और क्या चाहिये। परन्तु स्थाई खुशी नही रहती है क्यू कि देहअभिमान है। बहुत बड़ी मेहनत है अपने को आत्मा समझ कर बाप को याद करने में।ओम

रात्री क्लासः-7-2-67:- बाप आते है पतित को पावन बनाने की सर्विस करने। पुकारते ही है पतित पावन आओ। यह तो सब जानते है हम आत्मायें हैं। बाप बच्चों से बात करते हैं। बच्चे ही सुनते है। बच्चे ही जानते हैं बाबा ही सर्व की सदगती करते हैं। सर्व का दुःख हर्ता सुख करता है।ड्रायरेक्शन देते रहते है। जन्म जन्मान्तर भक्ति मार्ग में बच्चों ने बहुत तकलीफ देखी है। कल्प कल्पान्तर सही [illegible] का मेला लगता आता है।नई बात नही है। शास्त्र भी वो ही चलते आते है। वेद शास्त्र, यज्ञ तप दान पुण्य वो ही करते आते है।चित्र भी वो ही है।पता किसीको भी नही है। श्रीनाथ जाते है, जगन्ननाथ जाते है। चीज तो एक ही है फिर भी धक्के क्यू खाते है।भक्ति मार्ग है ही धक्के खान का मार्ग।यह ज्ञान तुम बच्चों ने ही सुना था और अब सुनते हो। और कोई को यह ज्ञान मिलता नही। इन ल न. में भी यह ज्ञान नही। बाप आकर ज्ञान का तिसरा नेत्र खोलते है। तुमको त्रिनेत्री बनाते हैं। आत्मा के ज्ञान चक्षु खुलते है।आत्मा को ज्ञान मिलता है ना। हम आत्मा है हमको परमपिता पढ़ाते है। यह पार्ट फिर कल्प बादहूबहू रिपीट होगा। सीढ़ी उतरते-2 सभी तमोप्रधान बन गये हैं।फिर सतोप्रधान बनाने बाप को आना पड़ता है। सर्व का सदगती दाता है ही वो एक। भारत में तो लाखों गुरू है। स्त्री का पती भी गुरू है।फिर भी गाते है सदगती दाता पतित पावन एक है। हीरो हीरोईन का पार्ट किसका है? शिव बाबा को नही कह सकते।तुम बच्चों को कहा जाता है।जो विजय पाने लगते है उनको हीरो हीरोईन कहा जाता है। बाप को याद तुम करते हो। ल न. को तो याद करने की दरकार नही।बाप है दाता। भक्ति मार्ग में भी दान करते है पात्र को देते हैं तो उनका ऊजूरा उनको परमात्मा देते है। कोई पतित को अगर देते है तो उसका ऊजूरा बाबा नही देंगे। जो अच्छा काम करेंगे तो बाप ऊजूरा क्यू नही देंगे।ओम

8-2-67 प्रातः क्लासकी बाकी पुअइन्टः- घर को याद करो और सुख धामको याद करो।पवित्र रहो। पवित्र ना रहने से याद नही कर सकेंगे। बहुत हार खाते हैं। लिखते है बाबा हम गिर गये?बाबा कहेंगे कुल कलंकित हो गये, काला मुंह कर दिया? लाहनत है तुम पर। तुम गये पाताल, अब हड़ गोड़े टूट गये, फिर वो ठहर नही सकते है। यह सीढ़ी चढ़नी नही है। इसलिये बाबा कुमारियों की खास महिमा करते हैं। कुमारियां ज्ञान में है तो बाप को कह सकती है हमारी अब सगाई शिव बाबा से हो गई। अब हमारा जो कुछ भी तेरे पास है वो दे दो। तो हम इसी सर्विस में लग जावें। अगर खा जावेंगे तो पापआत्मा बन जावेंगे। हमारा हिसाब हमको दो। यथा शक्ति कुछ तो देना होता है ना। हमको दो तो दो तो हम तीन पैर पृथ्वी के लेकर यह हास्पिटल कम यूनिवरसिटी खोलें। कितनो का कल्याण हो जावेगा। साधु सन्त आद एक का भी कल्याण नही कर सकेंगे। यहां कितनों का कल्याण कर लेंगें। हम तो यही सच्ची रूहानी सेवा करेंगें। तो ऐसे कितने सेन्टर्स खुल जावेंगें। ऐसे कैसे-2 आपनी राजधानी स्थापन हो जावेगी।युक्ति अच्छी है।ओम